११०. मानव ही सच्चाई का धारक-वाहक है

१०-१०-२०१३

सत्य को समझने वाला, प्रमाणित करने वाला केवल मानव ही होना देखा गया है | मानव जब सत्य, समाधान, न्याय को प्रमाणित करेगा तभी अखण्ड समाज का परम्परा बनेगा, साथ में सार्वभौम व्यवस्था भी | यही धारकता, वाहकता का मतलब है | धारकता का मतलब समझना, वाहकता का मतलब परम्परा में बना के रखना | धारक में अभी तक न्याय सम्मत धर्म, धर्म सम्मत न्याय होना पाया जाता है | सत्य समझ में आए बिना न्याय प्रमाणित होना सम्भव नहीं है | अस्तित्व में पारंगत होना ही सत्य को समझने का मतलब है | अस्तित्व के रूप में सत्य नित्य वैभवशील है | मानव ही इसको पहचान सकता है न कि जानवर | अभी तक मानव को जीवों के सदृश जीने वाला है, यह जीव जाति है ऐसा माना गया है | इसी के लिये अध्ययन कराते, इसी के लिये जीते हैं, इसी के लिये व्यवस्था करते हैं | इसी को पांडित्य माना, ज्ञान माना, चमत्कार भी माना | परम्परा का ऐसा हालत है | जबकि अस्तित्व में कोई चमत्कार नहीं है | इसको भले प्रकार से देखा है | ये पाया गया कि अस्तित्व नित्य वर्तमान रूप में सत्ता में सम्पृक्त प्रकृति के स्वरूप में नित्य विद्यमान है |

नित्य विद्यमान अस्तित्व स्वयं में विकास क्रम-विकास, जागृति क्रम-जागृति के रूप में प्रकाशित है | जागृति क्रम में मानव ही आता है | मानव ही जीवों से अच्छा जीने के लिये जिया है; जिसमें सफलता प्राप्त किया | सफलता का स्वरूप आहार, आवास, अलंकार, दूरश्रवण, दूरगमन, दूरदर्शन के रूप में होना पाया गया | अभी जागृति होना शेष है | जागृति के अर्थ में विकल्प प्रस्तुत किया है | आदर्शवाद, भौतिकवाद दोनों जीवों से अच्छा जीने के लिये जिया | आहार, आवास, अलंकार को आदर्शवाद के समय से प्राप्त किया | उसमें और गुणात्मक परिवर्तन और दूरगमन, दूरश्रवण, दूरदर्शन आधुनिक युग में प्राप्त हुआ | यह विज्ञान युग कहलाता है | इस विधि से मानव जीवों से अच्छा जीने की विधि को प्राप्त किया | इसी आधार पर मानव जात को ज्ञानावस्था में माना गया | ज्ञानावस्था का पराकाष्ठा में मानव ही आता है | मानवीयता का पहचान मानव को ही करना है; क्योंकि मनुष्येतर तीनों अवस्था निश्चित आचरण के साथ ही जीते हैं | हमने इसको भले प्रकार से देखा है और इसे नियम नाम दिया है | यह आचरण के रूप में होता है, व्यवहार के रूप में होता है |

अस्तित्व के रूप में रहता ही है | होने के रूप में परिवर्तन होना पाया गया है | यही रहना भी कहलाता है | इस प्रकार से मानव धीरे-धीरे अभ्यासी होकर अपने फासला को पूरा किया अर्थात जीवों से अच्छा जीने का फासला पूरा किया | इस अरसे तक मानव अपने अनेक समुदाय के रूप में पहचान बनाया | देश और संविधान के रूप में भी परिणत हुआ | इस क्रम में मानव सफलता को प्राप्त कर अपराध और भ्रम के अर्थ में अथवा अपराध और भ्रम के दलदल में फंसता गया | भ्रम को देखने से पता चला लाभोन्माद, भोगोन्माद, कामोन्माद के रूप में होना पाया गया | यह नकारात्मक भाग हुआ | इसी के साथ जीवों से अच्छा जीना सकारात्मक भाग रहा | इस प्रकार मानव जात अपने वैभव को बनाया | इसमें सदा-सदा अर्थ व्यवस्था प्रधान रहा | अर्थ व्यवस्था में आज का स्थिति में कागज पर आ गये | कागज और छापाखाना के योग से नोट कहलाया | इसके आधार पर सारा प्रपंच चल रहा है | सारा धरती पर चल रहा है |

सारा मानव पर चल रहा है | कागज को लेना, सुरक्षित करना | सुरक्षित करने की विधि बैंकों में और बीमा केन्द्रों के रूप में स्वीकारा गया | इस स्वीकृति के अनंतर कागज को पैसा माना | कागज तैयार करना सस्ता होता है कि महंगा होता है

वस्तु से? हमको सदा-सदा मंहगी वस्तु चाहिए | जैसा पहले कुटी से लेकर घर बनना, घर से महल बनना, महल से हरम बनना देखा गया | ये सब मानव का कुशलता का आधार पर रहा | मानव का कुशलता ही सभी वस्तुओं को जन्माया | लोकसम्मत विधि से वितरण किया | लोकसम्मत विधि का मतलब कागज देकर वस्तु पाना | इस प्रकार भ्रमित कार्यक्रम से सार्थक कार्यक्रम का संयोग हुआ | मूल रूप में चोरी, चकारी, जानमारी से मुक्त रहने के लिये किया | इस क्रम में मानव की स्वीकृति हुई | यह शनैः शनैः मणि मुद्रा से धातु मुद्रा, धातु मुद्रा से कागज मुद्रा बन गया | इसी पर चलता हुआ आदमी अपने को सार्थक मानता है | ऐसा कागज तैयार करने में कुशल व्यक्ति बहुत हो गये | इसी क्रम में जाली नोट, असली नोट की चर्चा हुई | सामान्य व्यक्ति जाली नोट को कैसा पहचानेगा, ये नहीं हुआ; क्योंकि मैं स्वयं एक सामान्य व्यक्ति के रूप में जीता हूँ | मैं जाली नोट, असली नोट को जानता नहीं हूँ | दोनों छापाखाना से ही निकलते हैं | असली नोट भी, जाली नोट भी |

इस विधि से मानव सही, गलती के चक्कर में आकर फंस गया | अब क्या किया जाय | जनमानस यही सोचता है कोई मूल्यवान वस्तु को ले लें | संग्रह के स्थान पर बहुत मजबूती के लिये कीमती धातुओं को खरीदना शुरू किये हैं | ये वर्तमान का हालत है | इसमें विचारणीय बिंदु यही है, चाहे कीमती धातु रहे, चाहे कागज रहे दोनों स्थिति में मानव निश्चित अवधि तक ही जीता है | यह विशेषकर सोच, विचार, कार्य प्रणाली पर निर्भर रहता है अर्थात ज्यादा समय तक जीना, कम समय तक जीना | मूल में शरीर रचना रासायनिक, भौतिक वस्तुओं से हुआ | रासायनिक, भौतिक वस्तुओं का परिणति निश्चित है | निश्चित कैसा हुआ पूछा? इसका उत्तर में यही लिखा है नियति विधि से | नियति विधि का मतलब बताया अस्तित्व स्वयं सहअस्तित्व होने से होना अध्ययनगम्य है | सह-अस्तित्व ही स्वरूप के रूप में सत्ता में सम्पृक्त प्रकृति है | इसको हमने देखा है | हमारा देखना साधना, समाधि, संयम विधि से हुआ है | इसको भले प्रकार से देखने के बाद विकल्प को लिखा है |

'विकल्प' नामक पुस्तिका में मेरा सत्यापन के साथ पूरे बात लिखा है | पूरे बात का स्वरूप अस्तित्व मूलक मानव केंद्रित चिंतन ही मध्यस्थ दर्शन सह-अस्तित्ववाद के रूप में प्रस्तुत हुआ | यही विकल्प है,अध्ययन के लिये प्रस्तुत है; जिसमें मानवत्व का अध्ययन होता है | हर मानव इस बात के लिये स्वतंत्र है, समझने के लिये, प्रमाणित करने के लिये, परम्परा बना के रखने के लिये | स्वतंत्रता स्वयंस्फूर्त अभिव्यक्ति है | बाकी सब परम्परा सहज अभिव्यक्ति है | जीवावस्था, प्राणावस्था, पदार्थावस्था में हर पक्ष परम्परा के रूप में है | पदार्थावस्था में यही अनेक रूप में होते हुए इसका परम्परा बना है; जिसमें मानव का कोई करतब नहीं है | प्राणावस्था अनेक प्रजाति का होते हुए बीजमूलक विधि से अनेक प्रजाति के रूप में मानव के सम्मुख है | जीवावस्था अनेक प्रजाति के रूप में प्रस्तुत है, जिसको मानव देखता है | यह अभी तक के अध्ययन में आया नहीं | इसी कारणवश विकल्प को लिखना आवश्यक रहा | विकल्प में इन बातों का स्पष्ट अध्ययन है |

इस अध्ययन से हर मानव, हर देश कालीय मानव, मानवीयतापूर्वक जी सकता है | मानवीयता ही जागृत चेतना कहलाता है | जागृत चेतना ही मानवीयता के रूप में प्रमाणित होता है | मानवीयता का स्वरूप मानव, देव मानव, दिव्य मानव के रूप में गण्य होता है; जिसको विकल्प में स्पष्ट किया है | इस विधि से हम यह समझ सकते हैं कि मा | यह एक स्वरूप ही अखण्ड समाज का आधार बनता है अथवा स्वरूप बनता है | अखण्ड समाज होना ही सार्वभौम व्यवस्था की पूर्व भूमि है | सार्वभौम व्यवस्था को परिवारमूलक स्वराज्य व्यवस्था नाम दिया है | इसका तात्पर्य यही है, हर परिवार भागीदारी कर सके व्यवस्था में | इसे भले प्रकार से अध्ययन कराने की विधि को विकल्प नाम दिया |

'विकल्प' स्वरूप में ही अस्तित्व मूलक मानव केंद्रित चिंतन स्पष्ट होता है | अन्य दर्शनों से मिश्रित कर इसे समझा नहीं जा सकता | विकल्प विधि से ही अस्तित्व नित्य वर्तमान होना, नित्य वर्तमानता में ही सत्ता में सम्पृक्त प्रकृति होना समझ में आता है | मूलभूत ऊर्जा के रूप में साम्य ऊर्जा प्रकृति के साथ निरंतर वर्तमान है | इसका नित्य वर्तमानता ही अस्तित्व में नित्य वर्तमानता का आधार है | सह-अस्तित्व नित्य वर्तमान है | पदार्थावस्था कब से जन्मा है, इसको बताया नहीं जा सकता | इसी विधि से पता लगता है | अस्तित्व विधि से, अस्तित्व नित्य वर्तमान होने की विधि से | सत्ता में सम्पृक्त प्रकृति के रूप में नित्य वर्तमान है | सह-अस्तित्व होना पता लगता है | इसको समझना ही मानव में अथवा इसे समझना ही मानव परम्परा में मानवीयता का आचरण शुरू होना होता है |

जय हो, मंगल हो, कल्याण हो |

- ए. नागराज | प्रणेता एवं लेखक | मध्यस्थ दर्शन (सह-अस्तित्ववाद) | दिव्य पथ संस्थान(भजनाश्रम) | अमरकंटक | जिला-अनूपपुर(म. प्र.)